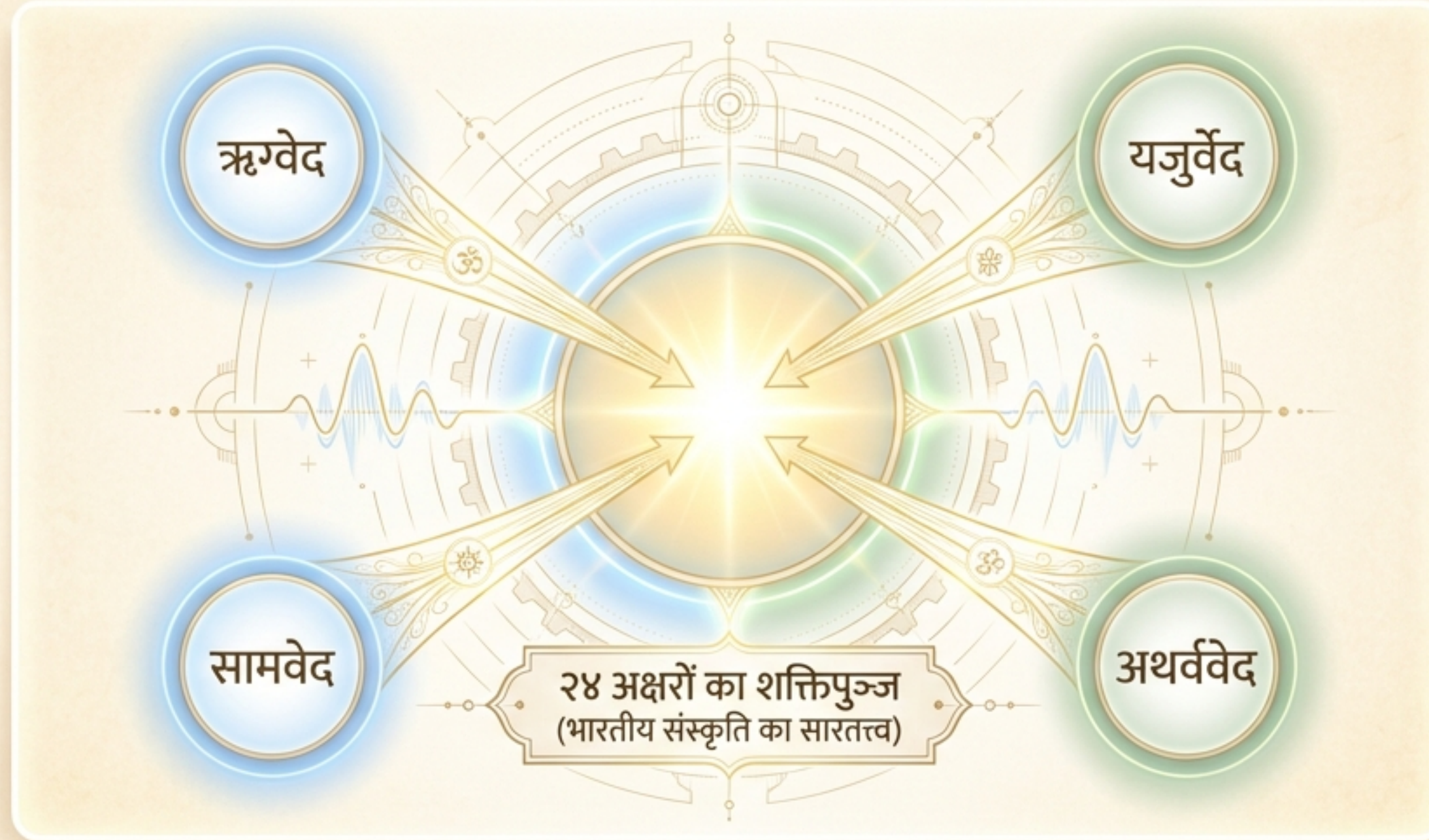


# विश्व का सबसे छोटा एवं समग्र धर्मशास्त्र

चौबीस अक्षरों का नाभिक — आद्यशक्ति गायत्री



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# मानवीय उत्कृष्टता का डी.एन.ए. (DNA)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नर से नारायण  
(पूर्णता) -  
भारतभूमि को  
‘स्वर्गादिपि गरीयसी’ बनाने  
वाली दिव्य सम्पदा।

देवत्व का उदय  
(परिष्कार) -  
तत्त्वज्ञान को हृदयंगम  
कर जीवनचर्या में  
समाविष्ट करना।

मनुष्य  
(सामान्य जीवन) -  
अज्ञान और मलीनता  
से घिरा हुआ।

गायत्री मात्र रटने के लिए नहीं,  
बल्कि चिन्तन और चरित्र के  
मन्थन का महामंत्र है।

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा  
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश  
जन-जन के बीच में पहुँचना  
ही चाहिए और आप सबसे  
कहियेगा — सब बच्चों से  
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर  
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के  
रूप में जन-जन तक  
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति  
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

## सृजन का आदि-स्रोत: एक ब्रह्माण्डीय आरेख



जल सम्पदा  
(Cosmic Ocean) -  
सर्वत्र व्याप्त  
आदि-अवस्था।

ब्रह्मा का असमंजस  
(Confusion) -  
एकाकीपन और  
दिशाहीनता।

आकाशवाणी  
(Cosmic Voice) -  
“गायत्री के माध्यम  
से तप करें।”

गायत्री तपस्या  
(Meditation) -  
भीतर से आवश्यक  
मार्गदर्शन का  
प्रकटीकरण।

पूर्णता (Realization)  
- सृष्टि रचना हेतु दो  
शक्तियों (गायत्री और  
सावित्री) का  
अवतरण।

# ब्रह्माण्डीय द्वैतः चेतन और जड़ का सन्तुलन

“वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश  
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे  
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को  
मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का  
प्रयास करें।”

— पूज्य गुलदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

चेतन / Consciousness

गायत्री (Gayatri)

परब्रह्म (Supreme Spirit)

विचारणा, भाव-सम्वेदना, आस्था

संसार का निर्माण  
(Creation of the  
Universe)

जड़ / Matter

सावित्री (Savitri)

प्रकृति (Nature)

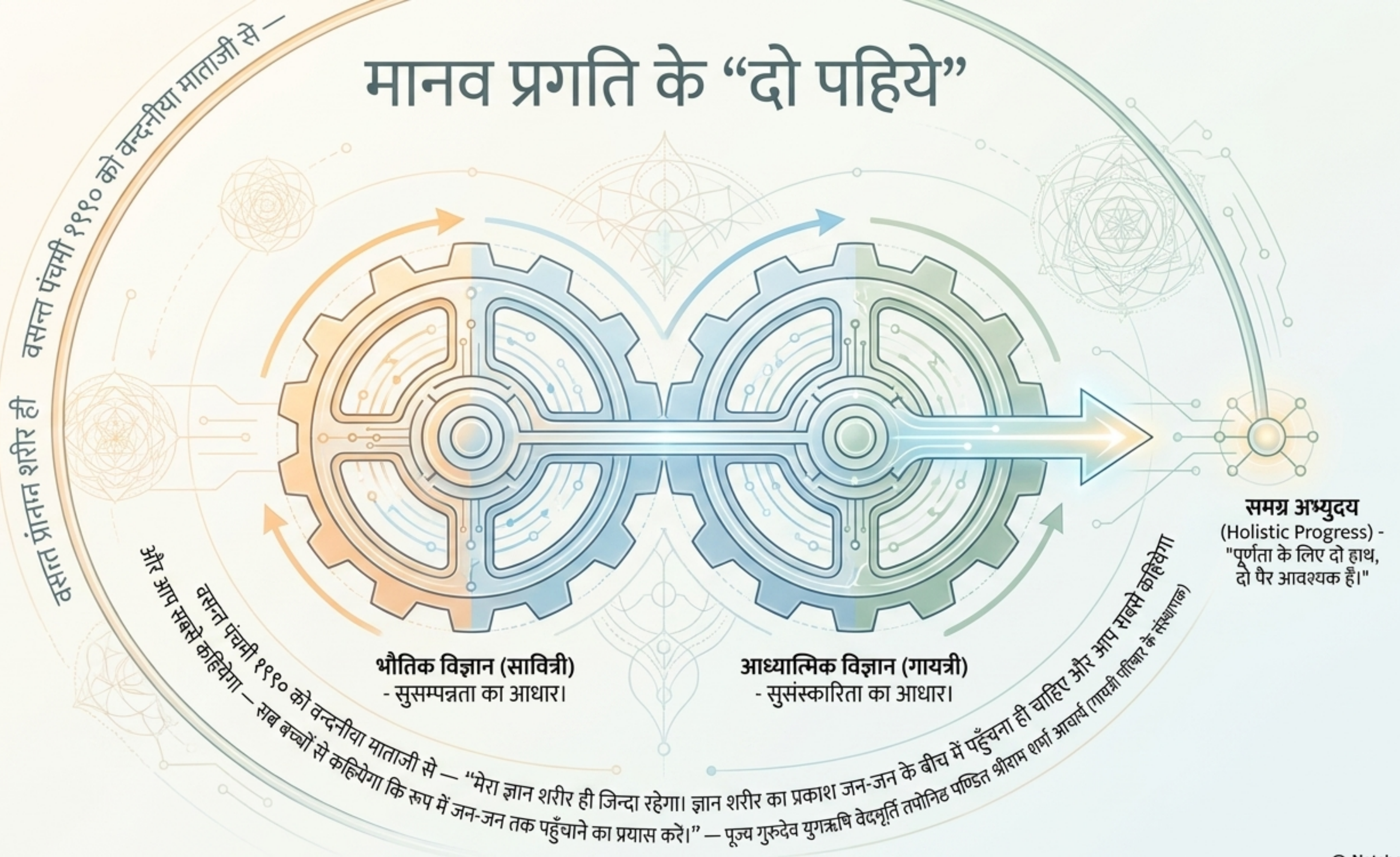
पदार्थ-संरचना, भौतिक प्रयोजन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

## दो विज्ञानों की तुलना: आध्यात्मिक और भौतिक

|  क्षेत्र – Domain | गायत्री  | सावित्री  |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|
| क्षेत्र – Domain                                                                                   | तत्त्वज्ञान, भावनाएँ, चिन्तन                                                                | भौतिक पदार्थ, विज्ञान, साधन                                                                  |
| केन्द्र – Focus                                                                                    | उत्कृष्टता, आदर्शवादिता, मर्यादा                                                            | पदार्थों का परिष्कार एवं सदुपयोग                                                             |
| प्रभाव – Impact                                                                                    | सामूहिक सद्बुद्धि और चरित्र निर्माण                                                         | सुविधाओं और संसाधनों का विकास                                                                |
| लक्षित उपलब्धि – Goal                                                                              | मानवीय गरिमा एवं आत्मिक शान्ति                                                              | भौतिक समृद्धि और वैज्ञानिक प्रगति                                                            |

# मानव प्रगति के “दो पहिये”



# त्रिपदा गायत्री: तीन धाराओं का आध्यात्मिक संगम

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

गायत्री महामंत्र  
(उद्गम एक)

भर्ग (तेजस्) - ऊर्जा एवं शौर्य

धियो यो नः प्रचोदयात् (सद्बुद्धि) - सामूहिक प्रज्ञा

देवस्य धीमहि (देवत्व) - शालीनता एवं उदारता

इस आध्यात्मिक त्रिवेणी-संगम का अवगाहन ही जीवन को बदलता है।



“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे ठबबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

## द्वितीय धारा: देवस्य धीमहि (देवत्व का वरण)



इस देवत्व के वरण से दूसरों के अधिकारों का हनन रुकता है और परमार्थ बढ़ता है।

वसन्त पंथमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पुरुष गुरुदेव युगकवि वेदवर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्वयं (Self) - मेधा और प्रज्ञा की जागृति।

समूह (Group) - निकटवर्ती लोगों में दूरदर्शी विवेकशीलता।

समाज (Society) - नीर-क्षीर विवेक वाली बुद्धिमत्ता का प्रसार।

संसार (World) - समग्र विश्व में सद्बुद्धि की प्रेरणा उभारना।

— वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने के लिए —’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# शब्द शक्ति का विज्ञान: ऊर्जा केन्द्रों का उद्दीपन

मंत्र के अक्षर शरीर एवं मन: तंत्र के मर्मकेन्द्रों पर प्रभाव छोड़ते हैं।

1 मुख, तालु, ओष्ठ और  
कण्ठ पर सूक्ष्म दबाव।

2 सूक्ष्म नाड़ियों, षट्चक्रों और  
पञ्चकोशों में झंकार।

3 चौबीस ग्रन्थियों और  
उपत्यिकाओं का उद्वेलन।

मंत्र साधना सोये हुए शक्ति-केन्द्रों  
को उसी तरह जगाती है जैसे  
सोये सिंह का जाग्रत होना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# यांत्रिक उपमा: "टाइपराइटर" और टेलेक्स का सिद्धान्त

Input / Key Pressed



क्रिया (Action):  
मंत्र के विशिष्ट अक्षर  
का उच्चारण।

प्रभाव (Effect):  
कण्ठ और तालु पर विशिष्ट  
दबाव (कुंजी दबाना)।

Input /  
Key  
Pressed



Output / Paper Printing



प्रतिक्रिया (Reaction):  
सूक्ष्म-शरीर के शक्ति-केन्द्र  
का उत्तेजित होना।

परिणाम (Result):  
विशिष्ट देव-शक्तियों और  
विभूतियों का जागरण  
(अक्षर छपना)।

Output /  
Paper  
Printing



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान से बत से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में में रून-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# शरीररूपी वाद्ययंत्र: झंकृत होती स्वरलहरी



**वाद्ययंत्र के तार (सितार/गिटार)**  
= मुख और कण्ठ के विभिन्न स्थानों पर प्रयुक्त दबावा।



**तारों की झंकार =**  
शरीर में उत्पन्न होने वाली सूक्ष्म वीणा की स्वरलहरी।



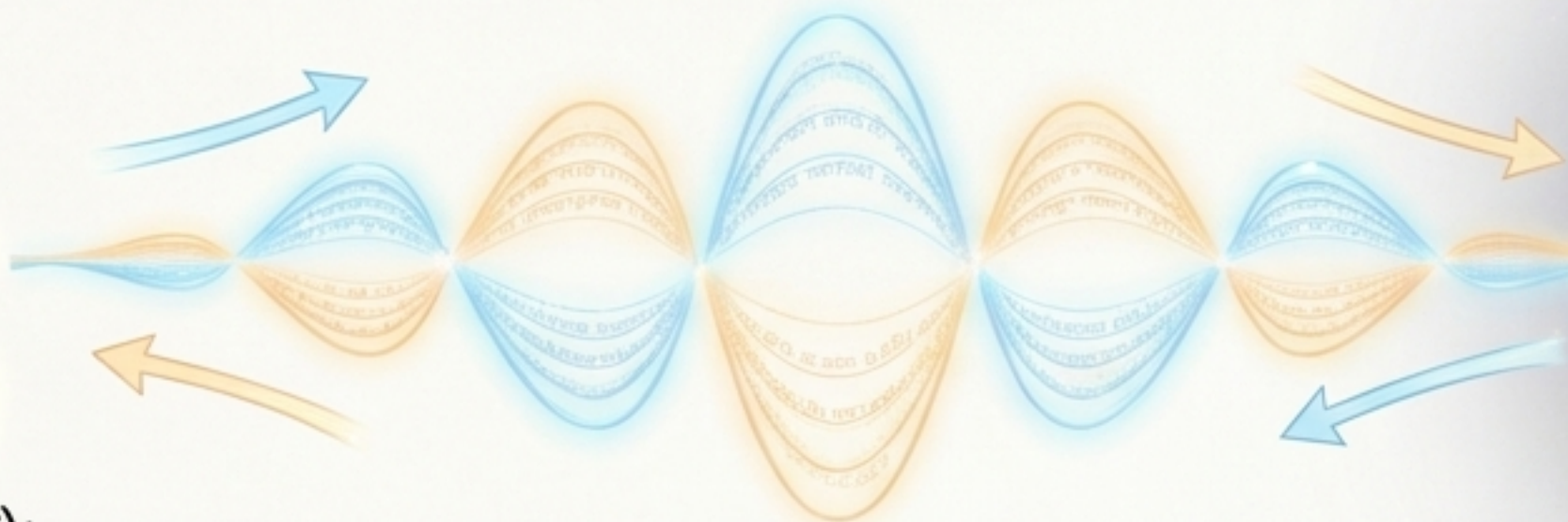
**संगीत का जन्म =**  
शरीर में विद्यमान दिव्यग्रन्थियों का जाग्रत होना और विशिष्ट शक्तियों का फलित होना।

# ब्रह्माण्डीय प्रसारण: रेडियो और दूरदर्शन का सिद्धान्त

Signal (तरंगें):  
गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों की  
शक्तिधारा (Radio Waves)।



Transmitter (प्रेषक):  
साधक का अन्तःकरण  
(Radio Transmitter)।



Receiver (ग्राहक):  
विराट् ब्रह्म का ब्रह्माण्डीय ग्रिड।



Connection (सम्पर्क): मंत्र उच्चारण टेलेक्स का काम करता है,  
जो व्यक्ति सीधे ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से जोड़ता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# सम्पूर्ण परिपथ: ध्वनि से सुपर-चेतना तक

